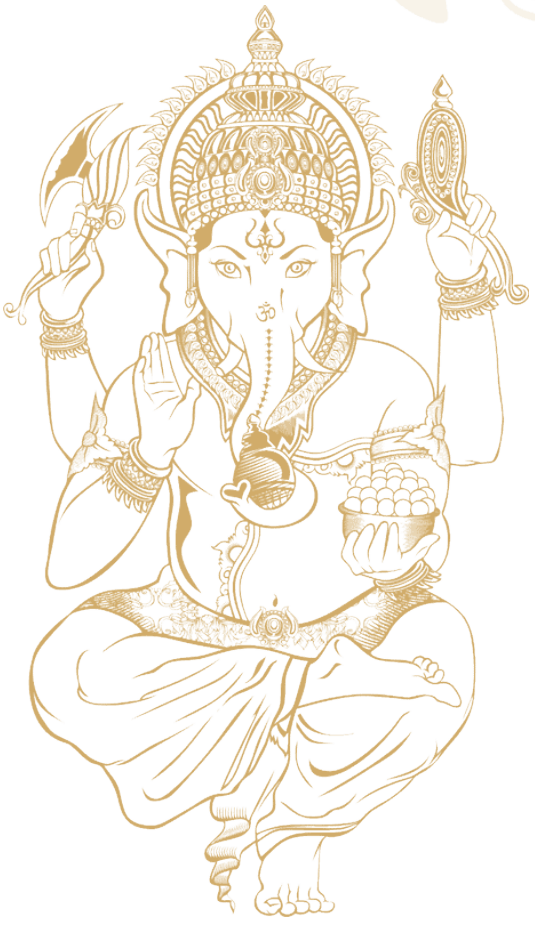

NIKHIL SHANKAR AGSAR

09 Oct 1987

09:10 PM

Ichallkaranji

Model: Web-KundliPhal **Order No: 121405801**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**09/10/1987**
दिवस	शुक्रवार
जन्म समय	**21:10:00 कला**
इष्ट	36:56:49 घटी
स्थान	**Ichallkaranji**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	16:40:00 उत्तर
रेखांश	74:33:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:31:48 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	20:38:12 कला
वेलान्तर	00:12:32 कला
साम्पातिक वेल	21:49:06 कला
सूर्योदय	06:23:16 कला
सूर्यास्त	18:15:05 कला
दिनमान	11:51:49 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्याचे अंश	22:07:24 कन्या
लग्नाचे अंश	12:10:54 वृषभ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृषभ – शुक्र
राशि–स्वामी	**मेष – मंगळ**
नक्षत्र–चरण	**भरणी – 4**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	वज्र
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	लो–लोकेश
पाया(राशि–नक्षत्र)	लौह – स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	आश्विन	17
पंजाबी	संवत : 2044	आश्विन	23
बंगाली	सन् : 1394	आश्विन	22
तमिल	संवत : 2044	पुरुटासी	23
केरल	कोल्लम : 1163	कान्नी	23
नेपाली	संवत : 2044	आश्विन	23
चैत्रादी	संवत : 2044	कार्तिक	कृष्ण 2
कार्तिकादी	संवत : 2044	आश्विन	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 2
तिथि समाप्ति वेल _____: 06:44:07
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: भरणी
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 26:48:07 कला
जन्म योग _____: भरणी
सूर्योदय समयी योग _____: वज्र
योग समाप्ति वेल _____: 28:27:40 कला
जन्म योग _____: वज्र
सूर्योदय समयी करण _____: गर
करण समाप्ति वेल _____: 06:44:07 कला
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 45:50:34
भभोग _____: 59:55:51
भोग्य दशा वेल _____: शुक्र 4 वर्ष 7 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिवस _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
रवि _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगळ _____: सिंह
बुध _____: वृषभ
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

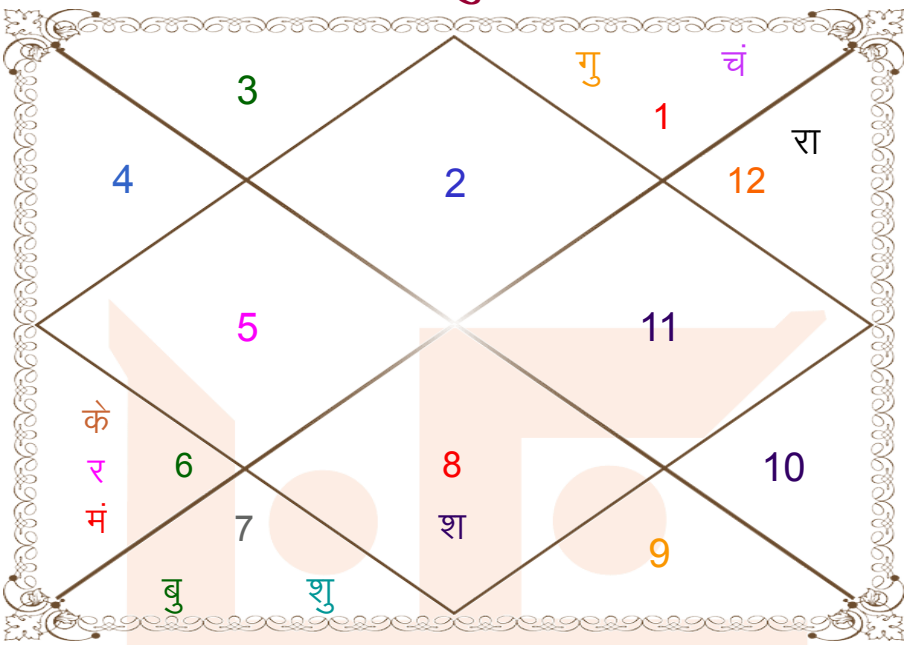

चन्द्र कुंडली

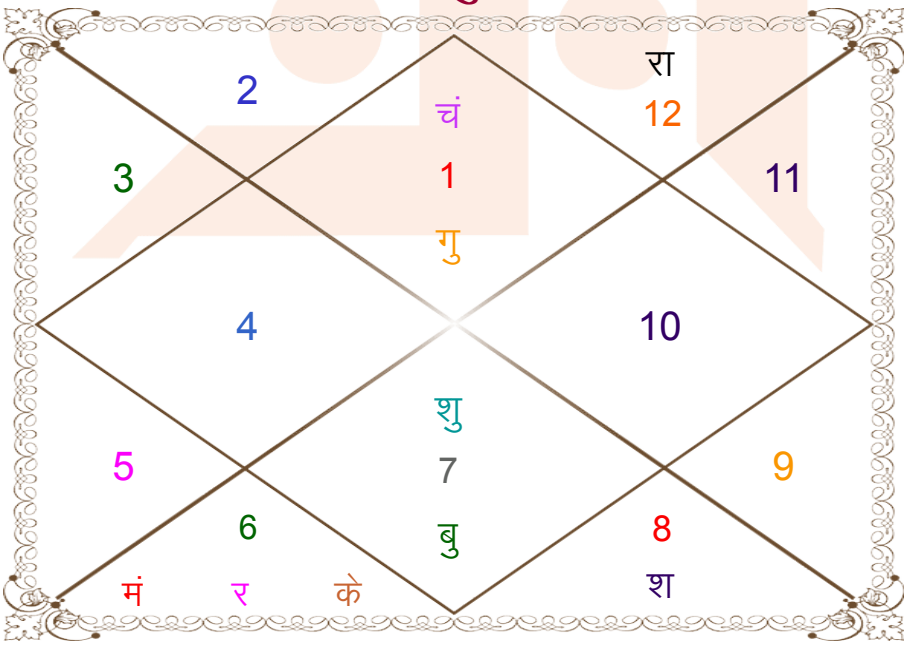

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

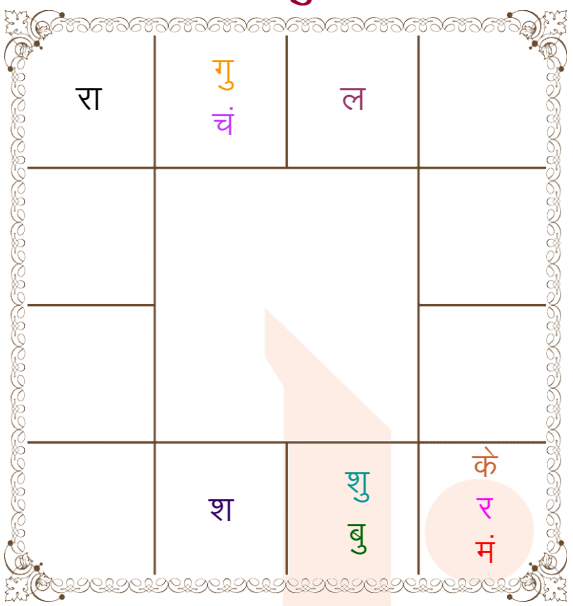

लग्न कुंडली

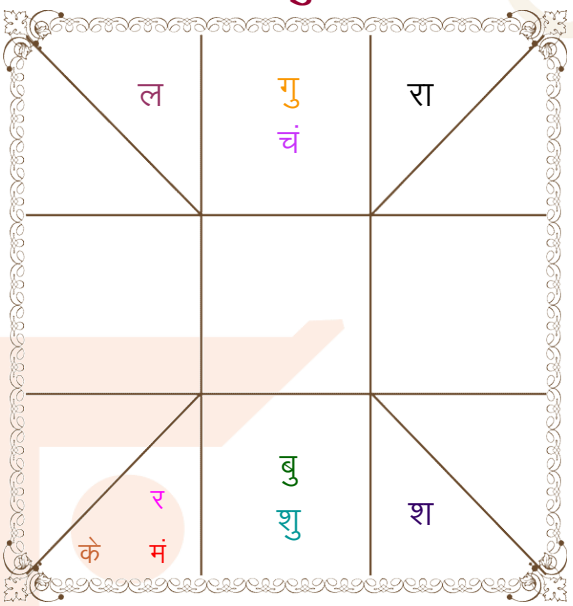

विंशोत्तरी
शुक्र 4वर्ष 7मा 25दि

शुक्र

09/10/1987

04/06/2092

शुक्र	04/06/1992
रवि	05/06/1998
चन्द्र	04/06/2008
मंगळ	05/06/2015
राहु	04/06/2033
गुरु	04/06/2049
शनि	04/06/2068
बुध	04/06/2085
केतु	04/06/2092

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 1मा 29दि

उल्का

07/12/2024

08/12/2030

उल्का	08/12/2025
सिद्धा	07/02/2027
संकटा	08/06/2028
मंगळा	08/08/2028
पिंगला	07/12/2028
धान्या	08/06/2029
भ्रामरी	06/02/2030
भद्रिका	08/12/2030

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	12:10:54	362:04:37	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	----
सूर्य			कन्या	22:07:24	00:59:15	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	सम राशि
चंद्र			मेष	23:33:51	13:15:18	भरणी	4	2	मंगळ	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगळ			कन्या	06:51:18	00:38:32	उ.फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
बुध			तुला	16:53:30	00:40:53	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	मित्र राशि
गुरु	व		मेष	02:11:20	00:07:53	अश्विनी	1	1	मंगळ	केतु	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			तुला	04:48:10	01:14:41	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगळ	शुक्र	मूलत्रिकोण
शनि			वृश्चि	22:53:38	00:04:34	ज्येष्ठा	2	18	मंगळ	बुध	चंद्र	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	08:39:18	00:01:55	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	सम राशि
केतु	व		कन्या	08:39:18	00:01:55	उ.फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			वृश्चि	29:38:29	00:01:53	ज्येष्ठा	4	18	मंगळ	बुध	शनि	----
नेप			धनु	11:40:52	00:00:44	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	----
प्लूटो			तुला	15:15:27	00:02:16	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	----
दशम भाव			कुंभ	01:18:18	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगळ	बुध	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:41:09

लग्न–चलित

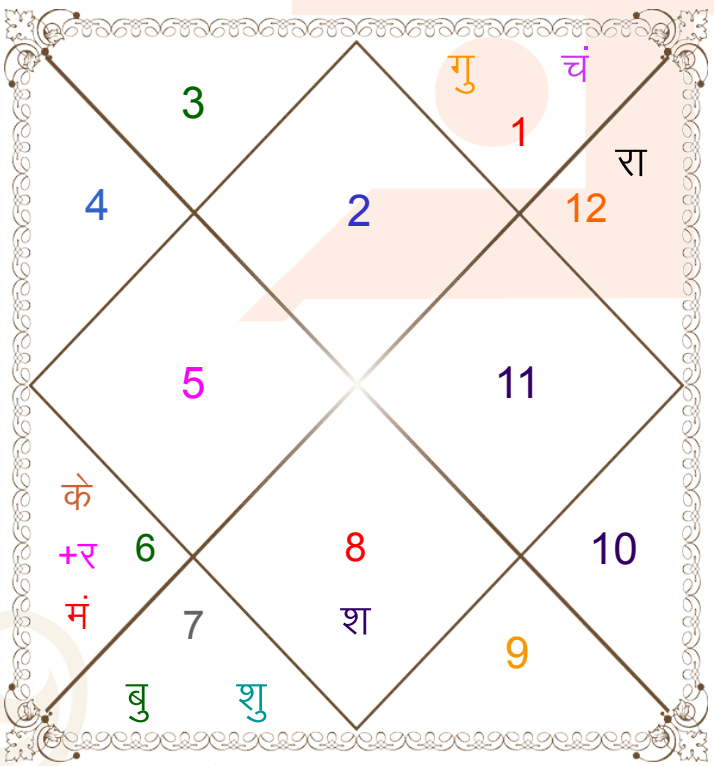

चन्द्र कुंडली

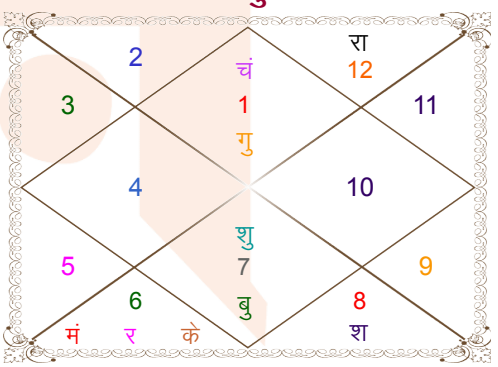

नवमांश कुंडली

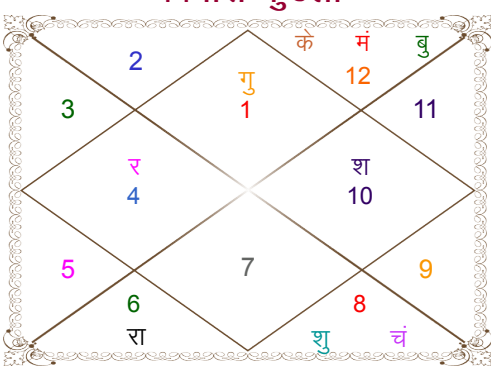

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	25:22:08	वृषभ	12:10:54
2	वृषभ	25:22:08	मिथुन	08:33:22
3	मिथुन	21:44:36	कर्क	04:55:50
4	कर्क	18:07:04	सिंह	01:18:18
5	सिंह	18:07:04	कन्या	04:55:50
6	कन्या	21:44:36	तुला	08:33:22
7	तुला	25:22:08	वृश्चिक	12:10:54
8	वृश्चिक	25:22:08	धनु	08:33:22
9	धनु	21:44:36	मकर	04:55:50
10	मकर	18:07:04	कुम्भ	01:18:18
11	कुम्भ	18:07:04	मीन	04:55:50
12	मीन	21:44:36	मेष	08:33:22

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृषभ	12:10:54
2	मिथुन	08:22:17
3	कर्क	03:41:15
4	सिंह	01:18:18
5	कन्या	03:12:33
6	तुला	08:13:17
7	वृश्चिक	12:10:54
8	धनु	08:22:17
9	मकर	03:41:15
10	कुम्भ	01:18:18
11	मीन	03:12:33
12	मेष	08:13:17

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

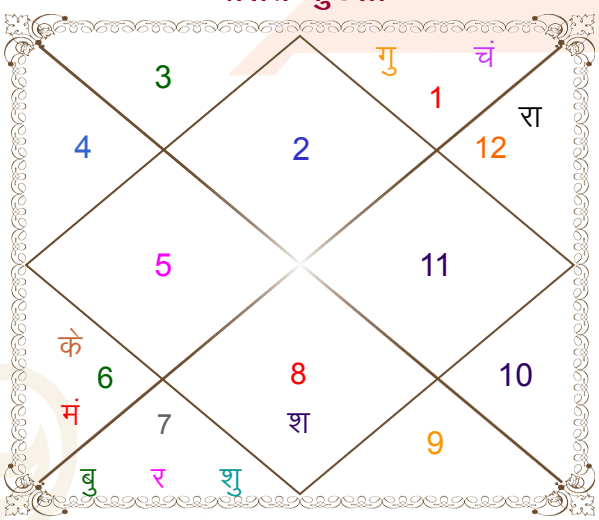

भाव कुंडली

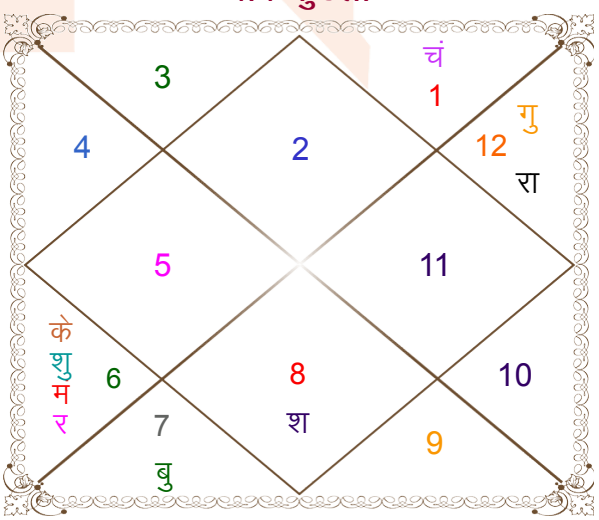

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	कुमार	शक्त	कौतुक	1.19	54 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	वृद्ध	शान्त	निद्रा	4.26	29 %
मंगळ	पुत्र	भ्रातृ	वृद्ध	खल	प्रकाश	1.08	48 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	मुदित	प्रकाश	4.11	53 %
गुरु	कलत्र	धन	बाल	मुदित	भोजन	3.39	46 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	बाल	स्वस्थ	प्रकाश	0.69	43 %
शनि	अमात्य	आयुष्य	कुमार	खल	नृत्यलिप्सा	4.09	36 %
राहु	———	ज्ञान	वृद्ध	निपीदित	प्रकाश	0.00	77 %
केतु	———	मोक्ष	वृद्ध	खल	प्रकाश	0.00	77 %
एकुण						**18.82**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

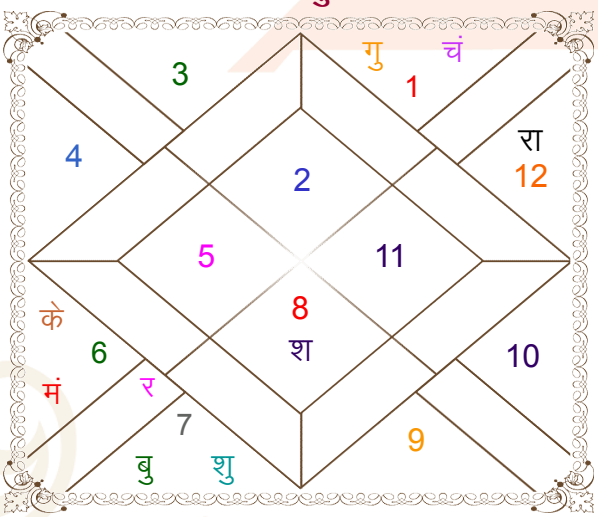

लग्न–चलित

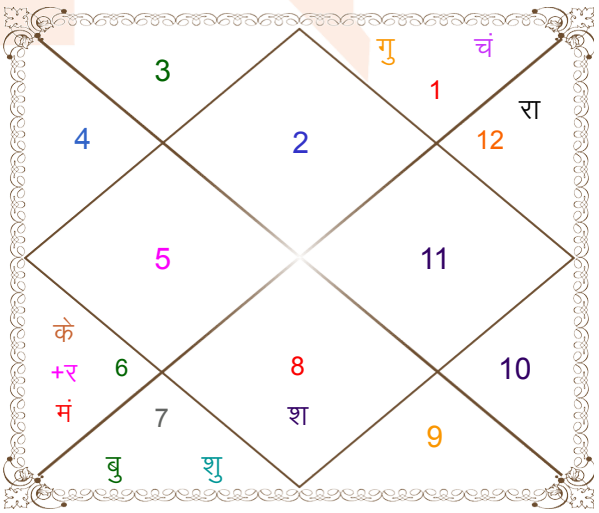

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : शुक्र 4 वर्ष 7 महिना 25 दिवस

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
09/10/1987		04/06/1992		05/06/1998		04/06/2008		05/06/2015	
04/06/1992		05/06/1998		04/06/2008		05/06/2015		04/06/2033	
	00/00/0000	सूर्य	22/09/1992	चंद्र	05/04/1999	मंगळ	31/10/2008	राहु	15/02/2018
	00/00/0000	चंद्र	23/03/1993	मंगळ	04/11/1999	राहु	19/11/2009	गुरु	11/07/2020
	00/00/0000	मंगळ	29/07/1993	राहु	05/05/2001	गुरु	26/10/2010	शनि	18/05/2023
	00/00/0000	राहु	23/06/1994	गुरु	04/09/2002	शनि	04/12/2011	बुध	04/12/2025
	00/00/0000	गुरु	11/04/1995	शनि	04/04/2004	बुध	01/12/2012	केतु	22/12/2026
	09/10/1987	शनि	23/03/1996	बुध	04/09/2005	केतु	29/04/2013	शुक्र	22/12/2029
शनि	04/06/1988	बुध	28/01/1997	केतु	05/04/2006	शुक्र	29/06/2014	सूर्य	16/11/2030
बुध	05/04/1991	केतु	04/06/1997	शुक्र	04/12/2007	सूर्य	04/11/2014	चंद्र	17/05/2032
केतु	04/06/1992	शुक्र	05/06/1998	सूर्य	04/06/2008	चंद्र	05/06/2015	मंगळ	04/06/2033

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
04/06/2033		04/06/2049		04/06/2068		04/06/2085		04/06/2092	
04/06/2049		04/06/2068		04/06/2085		04/06/2092		00/00/0000	
गुरु	24/07/2035	शनि	07/06/2052	बुध	01/11/2070	केतु	31/10/2085	शुक्र	05/10/2095
शनि	03/02/2038	बुध	15/02/2055	केतु	29/10/2071	शुक्र	01/01/2087	सूर्य	04/10/2096
बुध	11/05/2040	केतु	26/03/2056	शुक्र	29/08/2074	सूर्य	08/05/2087	चंद्र	05/06/2098
केतु	17/04/2041	शुक्र	27/05/2059	सूर्य	05/07/2075	चंद्र	08/12/2087	मंगळ	05/08/2099
शुक्र	17/12/2043	सूर्य	08/05/2060	चंद्र	04/12/2076	मंगळ	05/05/2088	राहु	05/08/2102
सूर्य	04/10/2044	चंद्र	07/12/2061	मंगळ	01/12/2077	राहु	23/05/2089	गुरु	05/04/2105
चंद्र	03/02/2046	मंगळ	16/01/2063	राहु	19/06/2080	गुरु	29/04/2090	शनि	10/10/2107
मंगळ	10/01/2047	राहु	22/11/2065	गुरु	25/09/2082	शनि	08/06/2091		00/00/0000
राहु	04/06/2049	गुरु	04/06/2068	शनि	04/06/2085	बुध	04/06/2092		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शुक्र 4 वर्ष 8 मा 13 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ	
04/12/2025		22/12/2026		22/12/2029		16/11/2030		17/05/2032	
22/12/2026		22/12/2029		16/11/2030		17/05/2032		04/06/2033	
केतु	26/12/2025	शुक्र	23/06/2027	सूर्य	08/01/2030	चंद्र	01/01/2031	मंगळ	08/06/2032
शुक्र	28/02/2026	सूर्य	17/08/2027	चंद्र	04/02/2030	मंगळ	02/02/2031	राहु	05/08/2032
सूर्य	19/03/2026	चंद्र	16/11/2027	मंगळ	23/02/2030	राहु	25/04/2031	गुरु	25/09/2032
चंद्र	20/04/2026	मंगळ	19/01/2028	राहु	14/04/2030	गुरु	07/07/2031	शनि	25/11/2032
मंगळ	13/05/2026	राहु	01/07/2028	गुरु	27/05/2030	शनि	02/10/2031	बुध	18/01/2033
राहु	09/07/2026	गुरु	25/11/2028	शनि	18/07/2030	बुध	18/12/2031	केतु	09/02/2033
गुरु	29/08/2026	शनि	17/05/2029	बुध	03/09/2030	केतु	19/01/2032	शुक्र	14/04/2033
शनि	29/10/2026	बुध	19/10/2029	केतु	22/09/2030	शुक्र	19/04/2032	सूर्य	03/05/2033
बुध	22/12/2026	केतु	22/12/2029	शुक्र	16/11/2030	सूर्य	17/05/2032	चंद्र	04/06/2033

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
04/06/2033		24/07/2035		03/02/2038		11/05/2040		17/04/2041	
24/07/2035		03/02/2038		11/05/2040		17/04/2041		17/12/2043	
गुरु	16/09/2033	शनि	17/12/2035	बुध	31/05/2038	केतु	31/05/2040	शुक्र	26/09/2041
शनि	18/01/2034	बुध	26/04/2036	केतु	18/07/2038	शुक्र	26/07/2040	सूर्य	14/11/2041
बुध	08/05/2034	केतु	19/06/2036	शुक्र	03/12/2038	सूर्य	12/08/2040	चंद्र	03/02/2042
केतु	22/06/2034	शुक्र	20/11/2036	सूर्य	14/01/2039	चंद्र	10/09/2040	मंगळ	01/04/2042
शुक्र	30/10/2034	सूर्य	06/01/2037	चंद्र	24/03/2039	मंगळ	30/09/2040	राहु	25/08/2042
सूर्य	08/12/2034	चंद्र	24/03/2037	मंगळ	11/05/2039	राहु	20/11/2040	गुरु	02/01/2043
चंद्र	11/02/2035	मंगळ	17/05/2037	राहु	12/09/2039	गुरु	04/01/2041	शनि	05/06/2043
मंगळ	29/03/2035	राहु	02/10/2037	गुरु	01/01/2040	शनि	27/02/2041	बुध	21/10/2043
राहु	24/07/2035	गुरु	03/02/2038	शनि	11/05/2040	बुध	17/04/2041	केतु	17/12/2043

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि	
17/12/2043		04/10/2044		03/02/2046		10/01/2047		04/06/2049	
04/10/2044		03/02/2046		10/01/2047		04/06/2049		07/06/2052	
सूर्य	31/12/2043	चंद्र	13/11/2044	मंगळ	23/02/2046	राहु	21/05/2047	शनि	25/11/2049
चंद्र	25/01/2044	मंगळ	12/12/2044	राहु	15/04/2046	गुरु	15/09/2047	बुध	30/04/2050
मंगळ	11/02/2044	राहु	23/02/2045	गुरु	30/05/2046	शनि	01/02/2048	केतु	03/07/2050
राहु	25/03/2044	गुरु	29/04/2045	शनि	23/07/2046	बुध	04/06/2048	शुक्र	02/01/2051
गुरु	03/05/2044	शनि	15/07/2045	बुध	10/09/2046	केतु	25/07/2048	सूर्य	26/02/2051
शनि	19/06/2044	बुध	22/09/2045	केतु	29/09/2046	शुक्र	18/12/2048	चंद्र	29/05/2051
बुध	30/07/2044	केतु	20/10/2045	शुक्र	25/11/2046	सूर्य	31/01/2049	मंगळ	01/08/2051
केतु	16/08/2044	शुक्र	09/01/2046	सूर्य	12/12/2046	चंद्र	14/04/2049	राहु	13/01/2052
शुक्र	04/10/2044	सूर्य	03/02/2046	चंद्र	10/01/2047	मंगळ	04/06/2049	गुरु	07/06/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
07/06/2052		15/02/2055		26/03/2056		27/05/2059		08/05/2060	
15/02/2055		26/03/2056		27/05/2059		08/05/2060		07/12/2061	
बुध	24/10/2052	केतु	11/03/2055	शुक्र	05/10/2056	सूर्य	13/06/2059	चंद्र	25/06/2060
केतु	21/12/2052	शुक्र	17/05/2055	सूर्य	02/12/2056	चंद्र	12/07/2059	मंगळ	29/07/2060
शुक्र	03/06/2053	सूर्य	07/06/2055	चंद्र	08/03/2057	मंगळ	01/08/2059	राहु	23/10/2060
सूर्य	22/07/2053	चंद्र	10/07/2055	मंगळ	15/05/2057	राहु	22/09/2059	गुरु	08/01/2061
चंद्र	12/10/2053	मंगळ	03/08/2055	राहु	04/11/2057	गुरु	08/11/2059	शनि	10/04/2061
मंगळ	08/12/2053	राहु	03/10/2055	गुरु	07/04/2058	शनि	01/01/2060	बुध	01/07/2061
राहु	05/05/2054	गुरु	26/11/2055	शनि	07/10/2058	बुध	20/02/2060	केतु	04/08/2061
गुरु	13/09/2054	शनि	29/01/2056	बुध	20/03/2059	केतु	11/03/2060	शुक्र	08/11/2061
शनि	15/02/2055	बुध	26/03/2056	केतु	27/05/2059	शुक्र	08/05/2060	सूर्य	07/12/2061

शनि - मंगळ		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
07/12/2061		16/01/2063		22/11/2065		04/06/2068		01/11/2070	
16/01/2063		22/11/2065		04/06/2068		01/11/2070		29/10/2071	
मंगळ	31/12/2061	राहु	21/06/2063	गुरु	25/03/2066	बुध	07/10/2068	केतु	22/11/2070
राहु	01/03/2062	गुरु	07/11/2063	शनि	19/08/2066	केतु	27/11/2068	शुक्र	21/01/2071
गुरु	24/04/2062	शनि	20/04/2064	बुध	28/12/2066	शुक्र	23/04/2069	सूर्य	08/02/2071
शनि	27/06/2062	बुध	14/09/2064	केतु	20/02/2067	सूर्य	06/06/2069	चंद्र	11/03/2071
बुध	24/08/2062	केतु	14/11/2064	शुक्र	24/07/2067	चंद्र	18/08/2069	मंगळ	01/04/2071
केतु	16/09/2062	शुक्र	06/05/2065	सूर्य	08/09/2067	मंगळ	08/10/2069	राहु	25/05/2071
शुक्र	23/11/2062	सूर्य	27/06/2065	चंद्र	24/11/2067	राहु	17/02/2070	गुरु	12/07/2071
सूर्य	13/12/2062	चंद्र	22/09/2065	मंगळ	17/01/2068	गुरु	14/06/2070	शनि	08/09/2071
चंद्र	16/01/2063	मंगळ	22/11/2065	राहु	04/06/2068	शनि	01/11/2070	बुध	29/10/2071

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगळ		बुध - राहु	
29/10/2071		29/08/2074		05/07/2075		04/12/2076		01/12/2077	
29/08/2074		05/07/2075		04/12/2076		01/12/2077		19/06/2080	
शुक्र	18/04/2072	सूर्य	13/09/2074	चंद्र	17/08/2075	मंगळ	25/12/2076	राहु	20/04/2078
सूर्य	09/06/2072	चंद्र	09/10/2074	मंगळ	17/09/2075	राहु	17/02/2077	गुरु	22/08/2078
चंद्र	03/09/2072	मंगळ	27/10/2074	राहु	03/12/2075	गुरु	06/04/2077	शनि	16/01/2079
मंगळ	03/11/2072	राहु	13/12/2074	गुरु	10/02/2076	शनि	03/06/2077	बुध	28/05/2079
राहु	07/04/2073	गुरु	23/01/2075	शनि	02/05/2076	बुध	24/07/2077	केतु	22/07/2079
गुरु	23/08/2073	शनि	13/03/2075	बुध	14/07/2076	केतु	14/08/2077	शुक्र	24/12/2079
शनि	03/02/2074	बुध	26/04/2075	केतु	14/08/2076	शुक्र	14/10/2077	सूर्य	08/02/2080
बुध	29/06/2074	केतु	15/05/2075	शुक्र	08/11/2076	सूर्य	01/11/2077	चंद्र	26/04/2080
केतु	29/08/2074	शुक्र	05/07/2075	सूर्य	04/12/2076	चंद्र	01/12/2077	मंगळ	19/06/2080

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	9
भाग्यांक	8
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 8
शत्रु अंक	4, 5,
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	83%	दम्पति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	75%	सन्तति सुख, सुख
पन्ना	बुध	72%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	61%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	53%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	38%	हानि, व्यय
पोवले	मंगळ	31%	सन्तति कष्ट, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	19%	व्यय, पराक्रम हानि
पुष्कराज	गुरु	0%	व्यय, दुर्घटना, हानि

रत्न की शुभता

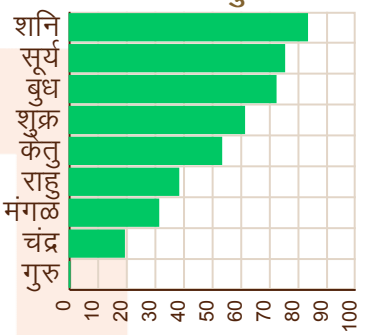

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	04/06/1992	62%	0%	31%	78%	0%	74%	89%	50%	59%
सूर्य	05/06/1998	88%	31%	44%	72%	0%	47%	70%	12%	31%
चंद्र	04/06/2008	81%	44%	31%	78%	0%	61%	83%	12%	31%
मंगळ	05/06/2015	81%	31%	53%	59%	0%	61%	83%	12%	59%
राहु	04/06/2033	62%	0%	6%	72%	0%	67%	89%	56%	31%
गुरु	04/06/2049	81%	31%	44%	59%	3%	47%	83%	38%	53%
शनि	04/06/2068	62%	0%	6%	78%	0%	67%	95%	50%	31%
बुध	04/06/2085	81%	0%	31%	84%	0%	67%	83%	38%	53%
केतु	04/06/2092	62%	0%	44%	72%	0%	67%	70%	12%	66%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, हीरा एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके ग्रहस्थ जीवन को सुखमय बनाये रखने का प्रयास करेगा। विवाह के बाद भाग्योदय करेगा। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाये रखने में सहयोग करेगी। आपको ठेकेदारी, कोयला, लोहा, खदानों आदि से जुडे कामों से लाभ मिलेगा। रत्न की शुभता से आपको किसी विदेशी काम या विदेशी माल में एजेन्ट का काम करने से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए

केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध षष्ठ भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना धारण करने से आपके विवेक भाव में वृद्धि होगी। तथा रत्न प्रभाव से आप अपने परिश्रम के बल पर सफलता अर्जित करेंगे। आप आत्मविश्वासी और पुरुषार्थी बनेंगे। यह रत्न आपको स्वभाव से तार्किक और विनोदी बनाएगा। शत्रुओं की अधिकता होने पर भी आप उन्हें शांत रखने में सफल रहेंगे। पन्ना रत्न आपकी मित्रता किसी बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति से करा सकता है। रत्न शुभता से आप अच्छे कार्यों पर व्यय करेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार

धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको सुशिक्षित और विवेकवान बनायेगा। नौकरी क्षेत्र में आपको स्त्रियों से सहयोग की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके साहस को नियंत्रित करेगा। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्र-पौत्रों से युक्त हो सकते है। यह रत्न धारण कर आप आवश्यक विषयों पर व्यय करने का प्रयास करेंगे। आपको भाई-बहनों और मामा से सुख प्राप्त होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए भी आप यह पुखराज रत्न धारण कर सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते है। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में

सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध षष्ठ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आप अपने शत्रुओं पर चातुर्य से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं पर अनायास ही विजय प्राप्त होगी। यह रत्न आपको उदार हृदय और सामान्य से अधिक बुद्धिमान बना रहा है। आप विद्वान, ऐश्वर्यवान होकर ऋण मुक्त जीवन-यापन करेंगे। इस रत्न को धारण करने से आपके रोगों में कमी होगी। आप गंभीरता के साथ अपने प्रतियोगियों को परास्त करेंगे। आपको उच्च प्रतिष्ठा, सुख और प्रभुता की प्राप्ति होगी। रत्न शुभता आपको बड़े कार्य करने के अवसर देगी। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने पर आपमें पारिश्रामिक क्षमता की कमी हो सकती है। यह रत्न स्वास्थ्य में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपको विलासी और भावुक स्वभाव अधिक दे सकता है। यह रत्न आपको वाचाल बना सकता है। आप समाज में योग्यतानुसार स्थान प्राप्त नहीं कर पाएंगे। आपके द्वारा धन लाभ कुछ अनैतिक तरीकों से हो सकते है। धन-लाभ प्राप्ति के लिए आप बुद्धि और चातुर्य का प्रयोग अधिक कर सकते है। आगे बढ़ने के लिए आप आंशिक रूप से स्वाथी भी हो सकते है। यह रत्न दूर स्थानों से आपकी लाभ प्राप्तियों को बाधित कर सकता है। आप कुछ हद तक अभिमानी हो सकते है। आय क्षेत्र के बढ़ते विवाद आपकी ऊर्जा और समय शक्ति का ह्रास कर सकते है।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर

आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मूंगा रत्न से शीघ्र निर्णय के कारण शेयर बाजार में सट्टे के कारण आपको हानि उठानी पड सकती है। इन कारणों से आप तनावग्रस्त और आक्रमक हो सकते है। आपकी संतान को आपके क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव आपकी पेट संबंधित परेशानियों को बढ़ा सकता है। स्वभाव की उग्रता वादि-ववाद का कारण बन सकती है। रत्न प्रभाव से शल्यचिकित्सा की स्थिति भी बन सकती है। चोट और दुर्घटनाओं से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी की स्थिति बन सकती है। जिम और व्यायामशाला में शक्ति प्रदर्शन आपको कष्ट दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यो में आय प्राप्ति के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते है। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्ति के प्रयास असफल हो सकते है। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती है। मोती रत्न आपके व्ययों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थो का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की

अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते है। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यो में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण कर आपमें आशावादिता भाव की कमी आ सकती है। दूसरों के लिए आपमें सहानुभूति तो बहुत होगी परन्तु आप चाहकर भी किसी के काम नहीं आ पाएंगे। कई बार आप दुष्ट लोगों पर भी सहानुभूति रखेंगे। पुखराज रत्न आपको जीवन में हानि करा सकता है। आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। आपको सम्मान की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न आपकी प्रसन्नता, सुख एवं सौभाग्य में कमी करेगा। यह रत्न रोग, ऋण और शत्रु आपके प्रबल कर सकता है। आयु और मातृ सुख में कमी कर सकता है। विदेश स्थानों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्ट्मेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(05/06/2015 - 04/06/2033)

राहु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(04/06/2033 - 04/06/2049)

गुरु की दशा में आपका नीलम व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा, मूंगा, गोमेद व मोती रत्न नेष्ट हैं और पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(04/06/2049 - 04/06/2068)

शनि की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(04/06/2068 - 04/06/2085)

बुध की दशा में आपका पन्ना, नीलम व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(04/06/2085 - 04/06/2092)

पन्ना, नीलम, हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों-छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे सकता हैं। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता हैं।

शुक्र की स्थति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता हैं।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओ की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता -पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान

करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

अष्टमस्थान चरण	09/10/1987-17/12/1987	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
चतुर्थस्थान चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थस्थान चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

तृतीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थस्थान चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टमस्थान चरण	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	व्यय
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थस्थान चरण	सम	पराक्रम हानि

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति पंचम भावात आहे पंचम भाव–संतति उच्च शिक्षा, तसेच बुद्धि चा भाव आहे, अतः मंगळ प्रभाव पासून आपण पुत्र संतति युद्ध रहणारे म्हणून तुम्हाळा जीवन साठी सुख भेंटणार. पण संतति प्राप्ति साठी काही उशीर होउ सकतात जीवनात आपण स्वतः परिश्रम आणि समज पासून उच्च शिक्षा प्राप्ति कराय साठी नेहमी प्रयत्न शील रहणारे यद्यपि या मधे कधीं–मधीं अड़चणे उत्पन्न होउ सकतात पण यांचा सामना साठी आपण सफळ रहणारे. तुमची तीव्र बुद्धि होणारी तसेच कधीं–मधीं तीव्रता चा भाव प्रदर्शित होणार, तुमची संवय कोण पण कार्य लवकर शुरू कराय ची होणारी. तसेच सरकारांचे मोठे आफीशर बरोबर चांगळे सम्बंध रहणार तसेच काही फायदे पण होणारे. पंचम भावात स्थित मंगळ ची चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव वर रहणारी या मुळे तुम्हाला उष्णता, पित्त, रक्त विकार वगेरे ची कधीं–मधीं त्रास होउ सकतात पण यांचे प्रभाव पासून तुम्हाळा विशेष किंवा एका–एकी धन लाभ चा योग आहे. सांसारिक विशेष कार्य मधे कधीं–मधीं अडचणे येउ सकतात पण यांचे सामना कराय साठी आपण सफळ होणारे, एकादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि आर्थिक उन्नति साठी शुभ रहणारी ह्या पासून जीवनात धन अर्जित करणारे तसच श्रीमंत सारख्या ख्याति प्राप्त होणारी तुमचे मिळकत चा श्रोत पण जास्ती रहणार समाजातीळ सम्मान ची वृद्धि होणारी. द्वादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे तुमी कधीं–मधीं खर्चे जास्ती करणारे असे तुमचे शुभाशुभ कार्य मधे होणार. तसेच वाम डोण्या मधे कोणी पण चिन्ह किंवा कमजोरी पण होउ सकतात पण राजनैतिक लाभ सामान्य आणि सुखी, होणार. पंचम भावात मंगळ प्रभाव पासून आपण सुखी जीवन साठी सफळ आणि समर्थ होणारे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में रवि और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म वृषभ लग्नामध्ये झाला असल्याने आपण शारीरिकष्ट्या सुंदर व आकर्षक असाल व इतरेजन आपल्या व्यक्तिमत्वाने प्रभावित होतील. तुम्च्या स्वभावात धैर्य व सहिष्णूता असेल व त्याचबरोबर वाणीमध्ये मिठास असेल. कष्टाने हाती घेतलेले काम पूर्ण करणे हा आपला गुण आहे. या गुणामुळे वरिष्ठांना प्रिय, विद्वान व धनऐश्वर्याने युक्त होऊन आनंदाने आपला काळ घालवाल.

आरोग्य आपले सामान्यपणे चांगले राहील, पण आजारी पडलात तर बरे होण्याला काळ जाईल. कधी कधी आपल्या हट्टी स्वभावाचेही दर्शन घडवाल आणि इतरेजनांपेक्षा आपल्याच विचारांना योग्य समजाल. त्यामुळे इतरेजनांच्या मनामध्ये तुमची छबी प्रभावित होऊ शकते. आराम करणे आपल्याला अतिशय आवडते. आपले वैशिष्ट्य म्हणजे एखादे काम हाती घेतले असेल तर ते पूर्ण होईपर्येत सोडणार नाही, अन्यथा, त्याचा विचार करण्यातच काळ घालवाल, त्यामुळे कधी कधी हानी होण्याचा संभव आहे, त्यामुळे अशी वृत्ती प्रयत्नपूर्वक सोडणे हितकारक ठरेल. शत्रूसुद्ध ा वेळोवेळी तुम्च्यासमोर अडचणी निर्माण करण्याचा प्रयत्न करतील, पण कोणाचीही पर्वा न करता आपण आपल्या मार्गाने जाण्याकडे तुमचा कल राहील.

कला व सौंदर्याचे तुम्ही पारखी आहात व कविता करण्याकडेसुद्धा तुमचा कल असू शकतो. त्याचबरोबर धनसंग्रह करण्याकडे तुमचा कल राहील. सांसारिक व भौतिक सुखसुविधासंबंधी आपल्या मनात तीव्र लालसा असेल व त्या प्राप्त करण्याकडे तुमचा नित्य प्रयत्न व परिश्रम कराल. एक विद्वान म्हणून आपल्या समाजात मान असेल. संधी दिसताच राजनीतिमध्ये रस निर्माण होईल, पण महत्वाचे नेतृत्वपद मिळण्याची शक्यता कमी आहे, पण सक्रिय कार्यकत्र्याच्या रूपात आपले योगदान प्रामाणिकपणे द्याल.

शांती व सहनशीलता या तुम्च्या स्वाभाविक गुणांमुळे लोक प्रभावित होतील आणि तुमचे मित्र बनण्यास उत्सुक असतील. त्याचबरोबर स्वकुटुंब, मित्र व भावंडांच्या भलाईसाठी तुम्ही नेहमी यत्नशील राहाल व परिश्रमपूर्वक भौतिक सुखसुविधा प्राप्त करून आयुष्य सुख व आनंदाने व्यतित करण्याचा प्रयत्न कराल. यथोक्तम–

गुणागुणीः स्याद् द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रण प्रियश्च।
धीरश्च शूरः प्रियवाकः प्रशान्तः स्यात्पुरूषो यस्य वृषे विलग्ने।।

– जातकाभरणम

अर्थ – वृषभ लग्नाचा जातक विद्वान, धनवान, गुरूजनांचा आदर करणारा, धैर्यवान, शूर, प्रियवक्ता आणि शांत हृदयाचा असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शुक्राची मिथुन राशी उदित होत होती. याच्या प्रभावामुळे आपली प्रवृत्ति धनसंग्रह करण्याची असेल आणि वर्तमान व भविष्यासाठी प्रचुर प्रमाणात धनार्जन करून त्याचा संग्रह केल्याने आपली आर्थिक स्थिती संतुलित राहील. त्याचबरोबर संपत्ती किंवा सुवर्णादि धातूंमध्ये गुंतवणूक करून त्यापासून भरपूर लाभ प्राप्त कराल. आपले कौटुंबिक जीवन सुख व शांतीयुक्त असेल आणि कुटुंबाच्या सुखासाठी आपण सदैव प्रयत्नशील राहाल आणि कौटुंबिक सहकार्य आपल्याला सदैव राहील.

सर्व स्वाद आपल्याला आवडतात, पण मिष्ठान्नाप्रति आपली अधिक रूची राहील. हा भाव वाणीचे प्रतिनिधीत्व करत असल्याने आणि त्याचा स्वामी बुध असल्याने आपल्या वाणीमध्ये मृदूता व प्रभाव राहील आणि इतरेजनांना आपल्या वाणीने प्रभावित करण्यास समर्थ असाल. त्याचबरोबर विचार अभिव्यक्ती कौशल्याने कराल पण काळानुसार आपल्या विचारांमध्ये बदलसुद्धा होत जातील. आतिथ्यशीलता आपल्या मनामध्ये सदैव राहील. याव्यतिरिक्त स्त्रीवर्गापासून आपल्याला उचित लाभ वेळोवेळी लाभेल आणि वाहन आणि बहुमूल्य रत्नांची प्राप्तीसुद्धा होईल. धार्मिक व सज्जन लोकांशी मैत्री करण्याकडे आपली प्रवृत्ती राहील.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावात रविची सिंह राशी उदित आहे, त्यामुळे आपल्या मातोश्री एक आदर्श व महत्वाकांक्षी स्त्री असतील आणि कुटुंबाचे पोषण उत्तम करेल आणि कुटुंबातील कुणाही व्यक्तीला तक्रार करायला जागा ठेवणार नाही. त्या एक यशस्वी सामाजिक कार्यकर्ता असतील आणि समाजामध्ये सर्व लोक त्यांच्यामुळे प्रभावित होतील व त्यांना यथोचित सन्मान देतील. कौटुंबिक सुख शांती व समृद्धिसाठी नित्य प्रयत्न करणाऱ्या असतील आणि आपल्या इच्छांना मुरड घालून कुटुंबाला पूर्ण वाहून घेतील.

आपले घर शहरातील महत्त्वाच्या भागात असावे अशी असेल आणि आपले घरसुद्धा सुंदर व आकर्षक असेल. त्याचबरोबर घर स्वच्छ ठेवून त्यामध्ये आधुनिक साजसजावटीने घर सजवण्याकडे आपला कल राहील. घरामध्ये आधुनिक संसाधने असतील. घरातील वस्तू अव्यवस्थित झाल्या तर संताप न करता स्वतःच त्या ठीकठाक करण्याची आपली प्रवृत्ती असेल. कालानुरूप आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल आणि जीवनस्तर जसा बदलेल तसे वाहनसुद्धा बदलेल. प्रशासकीय सेवेमध्ये आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल. पैतृक संपत्तीसुद्धा आपल्याला मिळे आणि शिक्षणसुद्धा चांगले होईल. आपल्या स्वभावात तेजी असेल आणि कन्या संतती अधिक असेल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावात बुधाची कन्या राशी उदित होती. त्याचा प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि वैदिक साहित्याचे ज्ञान प्राप्त कराल. आपण संसारात महत्वाच्या अशी शुभ कार्ये विनाविलंब पूर्ण करण्याचा प्रयत्न कराल. बुधाच्या राशीच्या प्रभावामुळे आपण विज्ञान, गणित, लेखन किंवा अध्ययनामध्ये विशेष रूची दाखवाल त्याचबरोबर पाककौशल्यामध्ये सुद्धा रूची राहील. सुखी दाम्पत्य जीवनासाठी आपल्या जीवनसाथीची निवड करताना आपल्या बुद्धिमत्तेची चुणूक दाखवाल. त्याचबरोबर वार्तालाप करण्यामध्ये आपण चतुर असाल आणि इतरेजनांना आपल्या गप्पांनी प्रसन्न कराल.

आपल्याला संतती सीमित असेल आणि त्यांच्या शिक्षण व आरोग्याविषयी आपण सजग असाल आणि आवश्यक असेल तेव्हा पैसाही खर्च कराल. संतती तुमच्या वृद्धावस्थेमध्ये आपली पूर्ण काळजी घेईल त्यांच्याकडून आपल्याला काही कष्ट होणार नाहीत. आज आपल्याला जे काही मिळत आहे ते पूर्वपुण्याईने मिळते यावर आपली पूर्ण श्रद्धा असेल. त्यामुळे प्रसन्न व संतुष्ट वृत्ती असेल. आपल्याला कन्या संतती अधिक व पुत्र संतती कमी असेल आणि तेसुद्धा आयुष्यामध्ये सुख व वैभवपूर्ण जीवन जगतील.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती, त्याच्या प्रभावामुळे आपले दाम्पत्य जीवन मधुर व शांतीपूर्ण राहील तसेच आयुष्य सुख व उन्नतीदायक जाईल. या राशीच्या प्रभावामुळे आपल्याला जीवनसाथी प्रेमळ व शांत स्वभावाच्या मिळेल.

तुमच्या जीवनसाथीला तुमच्या प्रेमसंबंधांविषयी शंका असेल, पण अशा गोष्टी आपण गुप्त ठेवणार नाही आणि तसे काही झाले तर तुम्ही तुमच्या पत्नीला स्पष्टपणे सांगाल. तुमचा कल सुखद व शांत कौटुंबिक जीवन व्यतित करण्याकडे असेल. तुम्ही घराकडे कधीही दुर्लक्ष करणार नाही आणि पत्नीच्या गरजांकडेही पूर्ण लक्ष द्याल, ज्यामुळे आपापसात प्रेम व सद्भाव कायम राहील. तुम्हाला आपली पत्नी चांगले कपडे नेसावी आणि प्रसन्न मुद्रेमध्ये असावे असे वाटत असते. कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक व मीन राशी किंवा लग्नाच्या जातकाबरोबर विवाह केल्यास आपले जीवन सुखकर जाईल. भौतिक साधने, वित्तसंबंधी कार्य, कृषि, संगीत, महिलांची वस्त्रप्रावरणे याकडे आपला जास्त रस आहे, आणि अशा व्यवसायामधून आपल्याला उचित लाभ होऊ शकतो. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्र मंत्र आदि व्यवसायसुद्धा आपण स्वीकारू शकता.

आपली पत्नी निरोगी, सुडौल शरीराची असेल आणि अनेकानेक कला तिला येत असतील आणि सौभाग्यपूर्ण आपले जीवन व्यतित करेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एखाद्या विख्यात कंपनी किंवा उद्योगामध्ये कार्यरत राहाल. खाणी, कंत्राटदारी किंवा खनिज आयातीमध्ये आपल्याला रूची राहील. याव्यतिरिक्त घरबांधणी, मेकॅनिकल इंजिनिअरिंग, तंत्र व स्टीलसंबंधी व्यापार किंवा कार्यक्षेत्राशी आपला संबंध असेल. त्याचबरोबर आपल्याला गुप्तचर विभागाशी संबंधित काम मिळू शकते. तुम्हाला आधुनिक भौतिक साधनांच्या व्यापारामध्ये रूची राहील आणि त्यातून भरपूर लाभही होईल. गुंतवणुकीतूनही आपल्याला लाभ होऊ शकतो किंवा वित्त उद्योगाशी आपला संबंध राहील. स्वकष्टाने पैसा कमवाल आणि जुगार किंवा सट्टा इत्यादिंमध्ये आपल्याला रस राहील आणि कधी कधी आपल्याला लाभसुद्धा होऊ शकतो, विशेषतः बुधाच्या दशेमध्ये याची प्रचिती येईल.

आपले वडील एक बुद्धिमान व्यक्ती असतील आणि त्यांची स्मरणशक्ती उत्तम असेल. त्यांचा अचूक तर्कांनी लोक प्रभावीत असतील आणि त्यांना सन्मान देतील, त्याचबरोबर ते स्पष्टवक्ते आणि निःस्वार्थी प्रवृत्तीचे असतील. नैतिक कार्य कोणतेही असले तरी ते करण्यास तत्पर असतील.

राजकारणाचा आधार शनि ग्रह असल्याने त्याच्या दशा–अंतर्दशेमध्ये आपण राजकारणामध्ये प्रवेश करू शकता त्याचबरोबर या काळात राजकारण किंवा सरकारकडून अपेक्षित मदत व लाभही प्राप्त होईल. याचबरोबर तुम्ही कार्यमग्न, चतुर, धर्मावर श्रद्धा ठेवणारे असाल पण त्याचबरोबर शत्रूही अधिक असतील.

फलादेश - 2026

ह्या वर्षी गुरु गोचरीने चतुर्थ भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष सामान्यताः चांगळे असेळ. प्रकृतीच्या दृष्टीने काळ चांगळा आहे. मानसिकदृष्टया समाधानी असाळ. कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. यंदा तुमच्या मनातीळ योजना व कार्ये सफळ होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. परिश्रमाने ळाभ व धनप्राप्ती होईळ. फळतः आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. ह्या काळात मित्र व बांधवांकडून सहकार्य मिळेळ. माळमत्ता व वाहनविषयक पण ह्या काळात मिळू शकते. ह्या वर्षी आई व सासरच्या ळोकांकडून ळाभ संभवतो. पण मिळकतीच्या दृष्टीने गोचरफळ व दशाफळ प्रतिकूळ असल्याने चांगळी फळे कमी मिळतीळ, व तुम्हाळा संघर्ष आणि परिश्रम जास्त करावे.

यंदा शनी गोचरीने बाराव्या भावात आहे. त्यामुळे प्रवास अधिक संभवतात. परदेशगमनाचा योग आहे. ह्या काळात मोठी योजना आरवाळ. तुमची कार्ये पूर्ण करण्यासाठी अनेक अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. इतरांशी वाद–विवाद होण्याची शक्यता आहे. मित्र, बांधव व इतरांकडून सहकार्य मिळणार नाही. स्वतः ची व परिश्रमानेच कार्य सफळता कराळ. मानसिक उद्वीग्नता व अशांती अनुभवाळ. यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अशुभ आहे. त्यामुळे ह्या काळात संघर्ष करावा ळागेळ. साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान करावे. जयामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू एकादश भावात तर केतू पंचमात असेळ. त्यमुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात तुम्ही यंदा सफळता मिळवाळ. नोकरी किंवा राजकारणात पदप्राप्ती संभवते. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष शुभ असेळ. धनवृद्धी संभवते. ज्यामुळे आर्थिक स्थिती सुदृढ़ होईळ. पण स्वभावात रात्रीटपणा असेळ. वेळोवेळी क्रोध दर्शवाळ. मुळांची चिंता कराळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर व दशा पण अशुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळतीळ. तरी धीराने कार्य करावे.

राहु ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 22/12/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु पंचम भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र षष्ठ भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातीळ वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे.

हा समय तुमचां साठी मध्यम रहणार अतः ह्या वेळी मिळे–जुळे फळ प्राप्त होणार. सफळता साठी खूप परिश्रम होणार तसेच कार्य क्षेत्र मधे अडचणे उत्पन्न होणारी, व्यापार मधे घाटे होऊ सकतो. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे त्रास उत्पन्न होऊ सकतो. जर आपण नोकरी मधे असणारे तर गुस्से पासून काही तरी अशुभ घटणे पण घटणारी मित्र आणि संबन्धी बरोबर मतभेद रहणार अतः असे समय वर कोणी वर विश्वास नका करावे आणि धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र षष्ठ भाव मधीं तुला राशि मधीं स्थित आहात पण राहु एकादश भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः कार्य क्षेत्र मधे सगड़े अडचणे उत्पन्न होणारी असे समय वर जोखम कार्य साठी सावध रहाय ला पाहिजे. नोकरी मधे स्थिति सामान्य रहणारी पण अतिरिक्त कार्य होण्या मुळे काही त्रास होउ सकतो कुटुम्ब सुख होऊ सकतो शत्रु तुमची प्रतिष्ठा प्रभावित करणारे स्वास्थ्य साठी सावध रहाय ला पहिजे आणि जेवण वर नियंत्रण ठेवाय ला पाहिजे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र षष्ठ भाव मधीं तुला राशि मधीं स्थित आहात पण राहु एकादश भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातीळ वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

राहु ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर 22/12/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि चा अंतर प्रारंभ होणार। शुक्र षष्ठ भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहे। पण रवि पंचम भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष

सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातील वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ नाय आहे, आत्म विश्वास आणि शान्ती रहणारी. तसेच विशेष कार्य प्रयोजने असफळ रहणारी, भविष्य साठी आशा उत्साह ची कमी रहणारी. मित्र आणि सहयोगी पासून समर्थन कमी प्राप्त होणार फाळतू प्रवास होणारी कुटुम्ब सुख शान्ती वरी नाय रहणारी. संतती स्वास्थ्य प्रभावित होणार शत्रु पासून फाळतू त्रास उत्पन्न होणार आणि आपण सामना करण्या साठी सफळ रहणारे.

फलादेश - 2030

यंदा गोचरीने शनी द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने कौटुम्बिक सुख–शान्ती मध्यम स्वरूपाची असेळ. परस्पर मतभेद होतीळ. त्याचबरोबर सहकार्य कमी असेळ. ह्या काळात मानसिक स्थिती चांगळी नसेळ पण महत्वाची कार्ये परिभमपूर्वक करण्यास तत्पर असाळ. शत्रू किंवा विरोधक अडथळे आणतीळ. फळतः व्यापार किंवा नोकरीत उन्नतीमध्ये अडचणी येतीळ. त्याचबरोबर धनार्जन पण आवश्यक प्रमाणात कराळ.यंदा गोचर व अन्य दशाफळ अनुकूळ नाही. त्याचबरोबर साडेसातीची शेवटची वर्षे असल्याने कौटुम्बिक, सामाजिक स्तरावर, नोकरी व राजकारणाळ अडथळे येतीळ. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. शनीचा अशुभ प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मध्यल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू अष्टमात व केतू द्वितीयात असेळ. त्यामुळे प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिकदृष्टया पण त्रास संभवतो. कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी विशेष नसेळ. परस्पर मतभेदांमुळे परस्पर स्नेह व सहकार्य कमीच असेळ. व्यापारात व कार्यक्षेत्रात उन्नती करता अतिशय कष्ट व संघर्ष करावा ळागेळ. त्यानंतरच थोडयाफार प्रमाणात सफळता मिळेळ. आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ पण आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. पण व्ययाधिक्यामुळे त्रास होण्याची शक्यता आहे. ह्या काळात तुम्हाळा अचानक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर जुगार, सट्टा, लॉटरी आदिमधून ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशा विशेष शुभ फळे देणार नाही. त्यामुळे महत्वाची कार्ये परिभमानंतरच संपन्न होतीळ. धनप्राप्तीतही अडथळे येतीळ. त्यामुळे शुभ फळांच्या प्राप्तीकरता राहू–केतूचा नियमित जप व दान करावे.

राहु ची महादशा मधीं रवि चा अंतर 16/11/2030 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर चन्द्र चा अंतर प्रारंभ होणार। रवि पंचम भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहे। पण चन्द्र द्व ादश भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे, विशेष कार्य मधे एका एकी सफळता प्राप्त होणार. कार्य प्रयोजने ची सफळता प्राप्त होणारी कुटुम्ब शान्त आणि सुखी तसेच परस्पर मधुर सम्वन्ध आणि सहयोग रहणार स्वास्थ्य पण उत्तम रहणार आपण सगड़े उन्नती कराय साठी सफळ रहणारे प्रवास पासूल लाभ प्राप्त होणार. नंतर विशेष माणूस आणि अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार आणि भविष्य मधे लाभ प्राप्त होणार अतः समय चा सदुपयोग करायला पाहिजे असा क न सफळता प्राप्त होणारी.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आहे, कधीं–मधीं अशुभ फळ पण प्राप्त होणार तसेच जुने कामना पूर्ण होणारी. आर्थिक स्थित चांगली रहणारी आणि नोकरी मधे उन्नती होउ सकतो मोठे अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध स्थापित होणार कुटुमविक स्वास्थ्य चांगळा रहणार. धर्म मधे चि उत्पन्न होणारी तसेच अनुभव प्राप्त होणार संत आणि विद्वान पासून लाभ होणार कोणी मांगळिक कार्य वर खर्च होणार कोर्ट केश मधे सफळता प्राप्त होउ सकतो.

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(05/06/2015 - 04/06/2033)

राहु की महादशा 05/06/2015 को आरम्भ और 04/06/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सट्टा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति

करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रूचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(04/12/2025 - 22/12/2026)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/06/2015 को प्रारंभ होकर 04/06/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 04/12/2025 को प्रारंभ होकर 22/12/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप भावनात्मक रूप से विचलित हो सकते हैं। प्रत्येक कार्य में सावधानी अपनाना श्रेयस्कर रहेगा। उदर रोग हो सकता है, अतः खानपान में संयम अपनाने से लाभ होगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(22/12/2026 - 22/12/2029)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/06/2015 को प्रारंभ होकर 04/06/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 22/12/2026 को प्रारंभ होकर 22/12/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के व्यक्ति आपसे रुष्ट रह सकते हैं। वे आपका चरित्र बर्बाद कर सकते हैं। शत्रु इस अवधि में समाप्त हो जाएंगे। विषय-वासना में अधिक रुचि के कारण स्वास्थ्य की हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(22/12/2029 - 16/11/2030)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/06/2015 को प्रारंभ होकर 04/06/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 22/12/2029 को प्रारंभ होकर 16/11/2030 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर जाकर रह सकते हैं। जंगल आदि में निवास हो सकता है। अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग हो सकता है। सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र
(16/11/2030 - 17/05/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/06/2015 को प्रारंभ होकर 04/06/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 16/11/2030 को प्रारंभ होकर 17/05/2032 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। चंद्रमा मन का कारक है। द्वादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी मानसिक दृढ़ता में कमी आ सकती है; अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं। किसी कांड या धोखाधड़ी में फंस सकते हैं, जिस कारण धन खर्च हो सकता है। आपके व्यवहार के कारण बहुत से गुप्त शत्रु हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।